E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

"पर्यटन और स्थानीय संस्कृति का संरक्षण:–मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले के संदर्भ में"

[1]ज्योति शर्मा

[1]शोधार्थी, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,बड़वानी

[2]डॉ दिनेश कुमार पाटीदार

[2]निर्देशक,सहायक प्राध्यापक (भूगोल) शासकीय आदर्श महाविद्यालय करी, बड़वानी

Paper Rcevied date

05/01/2025

Paper date Publishing Date

14/01/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.14739932

IMPACT FACTOR 5.924

सारांश

आधुनिक युग में पर्यटन को एक उद्योग माना जाता है। पर्यटन वर्तमान में विश्व का सबसे तेजी से विकसित होने वाला उद्यम है। सभी देशों का पर्यटन उस देश का एक महत्वपूर्ण भाग होता है। जो देश की अर्थव्यवस्था को एक शक्तिशाली अर्थव्यवस्था बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत होता है। अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था पर्यटन पर निर्भर रहती है। पर्यटन को उद्यम इसलिए कहा जाता है कि एक पर्यटन स्थल के कारण कई परिवारों की आजीविका चलती हैं। पर्यटन विविध प्रकार के प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक अवयवों तथा आधारभूत सुविधाओं जैसे रू– यातायात, आवासीय सुविधाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, सुरक्षा आदि का मिश्रित अदृश्य उद्यम होती है। पर्यटन उद्योग का अध्ययन स्पष्ट करता है कि इसकी आवश्यकता, महत्व एवं भविष्य दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पर्यटन उद्योग में रोजगार पैदा करने की असीम क्षमता तो है ही, साथ ही विदेशी मुद्रा अर्जन, मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने, सांस्कृतिक आदान–प्रदान बढ़ाने, निर्माण कार्य में सहायक साथ ही इतिहास, भूगोल का ज्ञान संग्रहण की अपार संभावना है। पर्यटन से समुदाय की सांस्कृतिक परंपराओं पर गर्व बढ़ता है। इससे लोगों को अपनी सांस्कृतिक विरासत की सराहना करने और उसे भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित करने का अवसर मिलता है। यद्यपि पर्यटन एक उद्यम के रूप में विकसित हो रहा है, इस हेतु सांस्कृतिक गतिविधियों के संरक्षण के लिए और संवर्धन के लिए योजनाएं और नीतियां तैयार करनी चाहिए ताकि पर्यटन के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत को प्रोत्साहन मिल सके।

बीज शब्द : आधुनिकता, पर्यटन, उद्यम, विकास, अर्थव्यवस्था, परिवार, आजीविका, प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आधारभूत सुविधाएं, शिक्षा, स्वास्थ्य, मैत्रीपूर्ण संबंध, रोजगार, संरक्षण, विरासत, परंपरा ।

प्रस्तावना :

भारत में पर्यटन के क्षेत्र में असीम संभावनाएं हैं दुनिया भर के पर्यटक आज भारत की ओर रुख कर रहे हैं। जिसके कारण भारत का पर्यटन अत्यधिक तेजी से फल फूल रहा है। भारत देश की विशालता का परिचय यहां विद्यमान पर्यटन स्थलों से ज्ञात किया जा सकता है। देश की आर्थिक समृद्धि में पर्यटन का विशेष योगदान है परंतु विकास का पिरामिड कभी ऊपर तो कभी नीचे होता रहता है। पर्यटन उद्योग में उतार–चढ़ाव के मुख्य कारणों में महामारी, आतंकवाद, प्राकृतिक आपदाएं तथा मौसम का बदलता स्वरूप आदि शामिल है। उक्त सभी कारणों के बावजूद भारतीय परिस्थितियां पर्यटकों को सदैव अपनी ओर

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

आकर्षित करती है। इस श्रेणी में देश के ह्रदय प्रदेश में स्थित सतपुड़ा प्रदेश भी पीछे नहीं है। सतपुड़ा की सुरम्य वादियों में बसे बड़वानी जिले की पहचान अपने प्राकृतिक, सभ्यता, संस्कृति के विविध रंगों व धार्मिक स्थलों के लिए हैं। प्राकृतिक सुंदरता सुंदरता से परिपूर्ण बड़वानी जिले को एक आदर्श पर्यटन क्षेत्र होना चाहिए, परंतु कुछ कारणवश ऐसा नहीं है। यह जिला सतपुड़ा श्रेणी की संपूर्ण चौड़ाई को घेरे हुए हैं जो नर्मदा घाटी और उसके दक्षिण के मैदान तक फैला है। यहां के जंगलों में जंगली जानवर देखने के लिए दूर–दूर से पर्यटक आते हैं, जो की आकर्षण का केंद्र है। क्षेत्र का निरंतर विकास हो रहा है जिसमें होटल, विश्रामगृह, जलपान गृह आदि इन्हीं कारणों ने पर्यटन व्यवसाय के प्रति जागरूकता को स्पष्ट किया है। इस प्रकार पर्यटन के क्षेत्र में जैसे–जैसे विस्तार होता जाएगा वैसे–वैसे क्षेत्र के निवासियों के लिए रोजगार के अवसरों में विस्तार होगा। जिससे क्षेत्र का आर्थिक विकास प्रगति के पथ पर अधिक गति से दौड़ने लगेगा। पर्यटन

पर्यटन और स्थानीय संस्कृति – संरक्षण :–

पर्यटन वर्तमान में एक प्रमुख उद्योग के रूप में उभर चुका है। ज्ञात है कि इस उद्योग में पर्यटन स्थलों पर जीविकोपार्जन के लिए संपूर्ण सुविधा उपलब्ध कराना एवं कई लाभकारी व्यवसायों का संचालन करना, जिससे धन अर्जित किया जाता है। इन्हीं कारणों से पर्यटन उद्योग किसी भी देश की आय का प्रमुख स्रोत होता है।

ज्ञातव्य है कि कोलंबस ने साहसिक यात्रा के जरिए अमेरिका की खोज कर ली, तो वास्कोडिगामा ने भारत को खोज निकाला, ह्वेनसांग, फाह्यान, मेगास्थनीज आदि ने दुर्गम राहें तय करते हुए भारत आकर बौद्ध दर्शन समेत अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया। इन्हीं कई यात्राओं द्वारा पर्यटन शब्द का उद्‌गम हुआ।

पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुर्सत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से की जाती है। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं जो यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थान में रहने जाते हैं। यह दौरा ज्यादा से ज्यादा मनोरंजन के लिए, व्यापार और अन्य उद्देश्यों से किया जाता है।

जनजातीय क्षेत्र में पर्यटन मात्र एक व्यावसायिक उद्यम नहीं है, अपितु सामाजिक स्थानीयता और परिवेश के आधार पर लोकप्रिय है। जनजातीय क्षेत्र में सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन की मुख्य पहुंच है, जो पर्यटकों के समक्ष आसानी से उपलब्ध है, क्योंकि पर्यटन में बाहरी तत्व प्रभावित करता है।

भारतीय परंपरा (संस्कृति) ष्अतिथि देवो भवष् की रही है। इस कारण पर्यटकों को देवों के समान समझा जाता है। यही संस्कृति आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र जिला बड़वानी में देखी जाती है यही परंपरा (संस्कृति) पर्यटकों को आकर्षित भी करती है। ष्अतिथि देवो भवष् की परंपरा के निर्वहन में कमी होने से पर्यटकों में आकर्षण की कमी देखी जा सकती है। जिसका प्रभाव क्षेत्र, राज्य, देश सभी की अर्थव्यवस्था पर स्वतः ही देखा जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र :

उक्त शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र भारत देश के मध्य प्रदेश राज्य के दक्षिण–पश्चिम में स्थित बड़वानी जिला है। जिले का क्षेत्रफल 5427 वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या 1385881 (2011 जनगणना) है। बड़वानी जिले की स्थापना 25 मई 1998 को हुई। नर्मदा नदी इसकी उत्तर सीमा बनाती है। जिले के दक्षिण में सतपुड़ा एवं उत्तर में विंध्याचल पर्वत श्रेणियां है।

जिला बड़वानी 21 डिग्री 37 मिनट से 22 डिग्री 22 मिनट उत्तर अक्षांश, 74 डिग्री 27 मिनट से 75 डिग्री 30 मिनट पूर्वी देशांतर के बीच फैला है। संपूर्ण जिला 09 तहसीलों – बड़वानी, ठीकरी, राजपुर, सेंधवा, पानसेमल, निवाली अंजड़, पाटी एवं वरला में विभाजित है। इसकी समुद्र तल से औसत ऊंचाई ..... पर स्थित है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कुल जनसंख्या पुरुष 599340, कुल जनसंख्या महिला 686541, कुल ग्रामीण जनसंख्या 1181812, कुल जनसंख्या शहरी 204059 है।

शोध के उद्देश्य :

1) पर्यटन उद्योग के विकास मॉडल का अध्ययन करना।

2) पर्यटन उद्योग के विविध आयामों का अध्ययन करना।

3) पर्यटन एवं संस्कृति के संरक्षण का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि :

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की प्रविधि या ज्ञान की खोज के लिए प्रयोग में ले गए प्रविष्टि प्रक्रिया को शोध प्रविधि कहा जाता है। यह एक प्रकार की वैज्ञानिक प्रविधि है जो कि किसी भी शोध कार्य को करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। उक्त शोध पत्र को तैयार करने में द्वितीयक समंको वाली प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

पर्यटन स्थल :

1) सिद्ध क्षेत्र चूलगिरी बावनगजा बड़वानी: (श्रेणी – धार्मिक एवं प्राकृतिक)

सिद्ध क्षेत्र चूलगिरी बावनगजा बड़वानी जिले का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है यह एक अति प्राचीन जैन तीर्थ स्थल है। यह क्षेत्र करीब 2000 साल पुराना है। बावनगजा सिद्ध क्षेत्र सातपुडा पर्वतमालाओं के सबसे ऊंचे पर्वत पर स्थित है। यह पर्वत समुद्र तल से 2200 फीट की ऊंचाई पर है। यह बावनगजा सिद्ध क्षेत्र में लंकापति रावण के पुत्र इंद्रजीत और भाई कुंभकरण ने मोक्ष की प्राप्ति की थी। इंद्रजीत और कुंभकरण के मोक्ष प्राप्त करने के कारण ही इस जगह को सिद्ध क्षेत्र कहा जाता है। यहां जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जी की 84 फीट की खड़गासन विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा देखने को मिलती है। उक्त स्थल बड़वानी मुख्यालय से 8 किलोमीटर की दूरी पर है जहां बस, कार, बाइक द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है।

2) श्री पार्श्व गिरी जैन मंदिर: (श्रेणी – धार्मिक व प्राकृतिक)

श्री पार्श्व गिरी जैन मंदिर जिले का प्रमुख धार्मिक स्थल है। यह एक जैन मंदिर है यह मंदिर ऊंची पहाड़ी पर स्थित है, बहुत सुंदर है। यहां पर यात्रियों के ठहरने के लिए भी सुविधा उपलब्ध है। यहां चारों तरफ सुंदर नजारा देखने को मिलता है। यह स्थल जिला मुख्यालय से बावनगजा रोड पर 5 किलोमीटर पर स्थित है। जहां पर कार, बस, बाइक द्वारा आसानी से पहुंच सकते हैं।

3) राजघाट बड़वानी : (श्रेणी–धार्मिक व प्राकृतिक)

बड़वानी जिले की जीवन रेखा मां नर्मदा के तट पर स्थित घाट राजघाट जिले का प्रमुख धार्मिक एवं प्राकृतिक पर्यटन है। यहां नर्मदा नदी के किनारे पर सुंदर घाट एवं प्राचीन मंदिर है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि के नाम से प्रसिद्ध राजघाट (कुकर गांव) में गांधीवादी विचारकों ने बापू के अस्ति कलश को यहां स्थापित किया था। उक्त स्थल जिला मुख्यालय से 4 किलोमीटर दूरी पर है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4) तीर गोला : (श्रेणी–ऐतिहासिक)

तीर गोला बड़वानी जिले का बड़वानी शहर में एक ऐतिहासिक स्थल है। यहां पर तीर और एक गोला का बहुत बड़ा मॉडल देखने को मिलता है। यह मॉडल सीमेंट, ईट से बनाया गया है। इसके निर्माता राजा देवी सिंह जी थे। यहां के राजा उदय सिंह की याद में उनके भाई राजा देवी सिंह जी ने समाधि के रूप में बनवाया था।

5) श्री मां बड़ी बिजासन माता मंदिर बड़वानी: (श्रेणी – धार्मिक व प्राकृतिक)

बड़वानी जिले के सेंधवा शहर से 16 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 03 पर मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित मां बड़ी बिजासन माता का मंदिर आस्था का बड़ा केंद्र है। शारदीय नवरात्रि की सप्तमी, अष्टमी व नवमी को लाखों की संख्या में श्रद्धालु मां के दर्शन के लिए आते हैं। पिंड स्वरूप में विराजित माताजी सतपुड़ा की सुरम्य वादियों में एक प्राकृतिक स्थल भी है। लगभग 150 वर्ष पुराने स्थल पर मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात राज्य से भक्त दर्शन करने आते हैं।

यह धार्मिक एवं प्राकृतिक रमणीय स्थल जिला मुख्यालय से 73 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां बस, कार व बाइक द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता हैं।

6) शिव कुंज धाम आशाग्राम : (श्रेणी–धार्मिक व प्राकृतिक)

बड़वानी नगर के उत्तर दिशा में आशाग्राम ट्रस्ट की 35 एकड़ बंजर पहाड़ी भूमि पर एक ही दिन में 3000 को पौधों का रोपण कर षशिव कुंज के पर्यावरणीय पाठशालाष के नाम से विख्यात शिव कुंज धाम प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थल है। यहां 55 फुट के विशाल पंचमुखी हनुमान जी, सैलानियों के लिए सनसेट एवं सनराइज प्वाइंट, पहाड़ी से मां नर्मदा के प्रत्यक्ष दर्शन स्थल, मुक्ताकाश मंच, बौद्धिक मंच, ओपन जिम एवं सुंदर गार्डन, मॉर्निंग ट्रैक, 1800 वर्ग फीट का योग साधना केंद्र, कैफेटेरिया, सेव द अर्थ स्टैचू , फूलों की घाटी (फ्लावर वैली) महा आदियोगी की (30 फीट) प्रतिमा, ओपन मंच राइजिंग, श्री राम प्रतिमा, वनदेवी प्रतिमा आदि दर्शनीय व रमणीय स्थल है।

शिव कुंज पर्यटन स्थल में पर्यावरणीय पाठशाला के माध्यम से जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण एवं ऊर्जा संरक्षण का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

7) तोरणमाल बड़वानी : (श्रेणी–प्राकृतिक)

तोरणमाल को एक छोटा और अनदेखा हिल स्टेशन माना जाता है। जो सतपुड़ा रेंज की बड़वानी पहाड़ियों द्वारा खूबसूरती से गिरा हुआ है। ऐसा माना जाता है की तोरणमाल का निर्माण उत्तर से दक्षिण की ओर एक धारा के कटने से हुआ था। उक्त प्राकृतिक स्थल मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्य की सीमाओं से गिरा है। तोरणमाल को महाराष्ट्र राज्य का दूसरा सबसे ठंडा स्टेशन माना जाता है। गर्मियों के दौरान अपेक्षाकृत ठंडी जलवायु का अनुभव करवाने वाला हिल स्टेशन तोरणमाल सतपुड़ा पहाड़ियों में एक छोटा पठारी क्षेत्र लगभग 41 वर्ग किलोमीटर में स्थित है। इसका हरा भरा परिवेश और वन्य जीव अभ्यारण पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह स्थान प्राकृतिक सुंदरता और शांति का एक आदर्श मिश्रण है।

तोरणमाल में सीता खाई, ईकोपॉइंट, खड़की पॉइंट (ट्रैकिंग क्षेत्र), गोरखनाथ मंदिर, लोटस लेक, मछिंद्रनाथ गुफा, आवाशबारी पॉइंट, तोरण देवी मंदिर (600 वर्ष पुराना माना जाता है) वन पार्क और औषधीय पौधे उद्यान आदि रमणीय स्थल है। यहां पर्यटको को ट्रैकिंग, वॉटरफॉल, रैपलिंग, नौका विहार, कैंपिंग, दर्शनीय स्थल, फोटोग्राफी आदि का लुप्त प्राप्त होता है।

तोरणमाल जिला मुख्यालय बड़वानी से 70 किलोमीटर की दूरी पर तथा राष्ट्रीय राजमार्ग सेंधवा से 101 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां स्वयं के वाहन द्वारा पहुंचा जा सकता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

8) नांगलवाड़ी भिलट देव मंदिर : (श्रेणी – एडवेंचर, धार्मिक व प्राकृतिक)

बड़वानी जिले में स्थित नांगलवाड़ी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र सीमा पर स्थित एक अत्यंत सुंदर एवं दर्शनीय स्थल है। यह सतपुड़ा हिल रेंज में स्थित है। पहाड़ी की चोटी पर एक बहुत प्रसिद्ध भिलट देव मंदिर पर्यटकों, तीर्थ यात्रियों के लिए मुख्य आकर्षण है। यहां नाग पंचमी पर प्रतिवर्ष मेले का आयोजन किया जाता है। जिसमें लाखों की संख्या में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के भक्त अपनी मनोकामना लेकर आते हैं। उक्त स्थल लगभग 2200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

जिला मुख्यालय बड़वानी से नांगलवाड़ी 63 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां बस, कार, बाइक से पहुंचा जा सकता है।

9) बंधान झरना : (श्रेणी – प्राकृतिक)

जिला मुख्यालय से 3 किलोमीटर दूर प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण सतपुड़ा के उत्तरी पाद में स्थित बंधान झरना स्थल एक प्राकृतिक झरना है। यहां वर्ष भर पानी का बहाव देखा जाता है। झरना स्थल पर ही भगवान शिव की बड़ी प्रतिमा एवं मां खोडियार मंदिर आकर्षण का केंद्र है, यहां की 2000 आबादी वाले गांव बंधान के लिए झरने का पानी पेयजल के साथ निस्तार के काम आता है। जिला मुख्यालय के नजदीक होने के कारण यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है।

10) रामगढ़ का किला : (श्रेणी – ऐतिहासिक व प्राकृतिक)

जिला मुख्यालय से लगभग 65 किलोमीटर दूरी पर सतपुड़ा की पर्वत श्रृंखला में स्थित रामगढ़ का किला ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक स्थल है।

बारिश के बाद के मौसम में इसकी खूबसूरती रोमांचित कर देने वाली होती है। ऊंचे पहाड़ पर जंगलों के रास्ते, बादलों से गिरा किला, जमीन पर छाई हरियाली, बेहद ही मनमोहक व रोमांचक होती है।

परमार शासको द्वारा बनवाया गया यह किला समुद्र तल से 1532 फीट ऊंचाई पर बना है जो करीब 1000 साल पुराना है। 8वीं से 11वीं शताब्दी के बाद बड़वानी के सिसोदिया शासकों ने किले का जीर्णोद्धार कराया था।

उक्त पर्यटन स्थलों के साथ–साथ कई और भी स्थल है जिनमें मुख्य रूप से:

- शहीद भीमा नायक सागर बांध, बड़वानी : (श्रेणी – प्राकृतिक एवं कृत्रिम)
- पत्थरी दरगाह शरीफ, पलसूद : (श्रेणी – धार्मिक)
- शिव मंदिर , बड़वानी : (श्रेणी – धार्मिक)
- भंवरगढ़ का किला, सेंधवा : (श्रेणी – ऐतिहासिक)
- राजराजेश्वर मंदिर, सेंधवा : (श्रेणी – धार्मिक)
- सांवरिया सेठ मंदिर, बड़वानी : (श्रेणी – धार्मिक)
- हनुमान टेकरी, बड़वानी : (श्रेणी – धार्मिक व प्राकृतिक)
- धोबडिया तालाब, बड़वानी : (श्रेणी– प्राकृतिक)
- सिंगाजी के जन्मस्थली खजूरी : (श्रेणी – धार्मिक)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पर्यटन स्थलों का विकास :

अध्ययन क्षेत्र में सिद्ध क्षेत्र चूलगिरी बावनगजा का राज्य शासन के द्वारा अच्छा विकास किया गया है।जिसमें सड़कों के साथ अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध है। साथ ही बावनगजा रोड पर बड़वानी शहर से 5 किलोमीटर दूरी पर श्री पार्श्व गिरी जैन मंदिर भी बना है। जहां पर भी सड़क एवं उद्यान आदि का विकास कर पर्यटकों को आकर्षित किया जा रहा है।

बड़वानी के समीप नर्मदा नदी के तट पर एक धार्मिक स्थल राजघाट है जो कि वर्तमान में नर्मदा के बैक वॉटर से डूब प्रभावित है। इसके विकास की भी योजना शासन द्वारा बनाई गई है। साथ ही बड़वानी शहर में स्थित ऐतिहासिक स्थल तीर गोला का भी राज्य शासन द्वारा रखरखाव, स्वच्छता व पहुंच मार्ग का विकास किया गया है।

बड़वानी जिले के सेंधवा शहर के समीप बड़ी बिजासन माता मंदिर का भी प्रशासन के द्वारा अच्छा विकास एवं रखरखाव किया गया है। साथ ही बड़वानी शहर में शिवकुंज धाम आशा ग्राम का भी जिला प्रशासन, आशा ग्राम ट्रस्ट एवं जन सहयोग से विकास किया गया है। जहां पूरी शिव कुंज पहाड़ी पर पेड़ पौधों को रोपकर पर्यावरण संरक्षण का कार्य किया गया है।

इसके अलावा बड़वानी जिले के अन्य पर्यटन स्थलों तोरण माल, नांगलवाड़ी, बंधन झरना, रामगढ़ का किला आदि का राज्य प्रशासन, जिला प्रशासन द्वारा विकास एवं रखरखाव करके संस्कृति एवं पर्यावरण का संरक्षण किया गया है।

उपसंहार :

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न पर्यटन स्थलों का सरकार एवं गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से विकास का कार्य निरंतर प्रगति पर हैं। जिसके माध्यम से छोटे, मध्यम और बड़े पर्यटन क्षेत्रों का विकास किया जा रहा हैं। जिससे भविष्य में पर्यटन के क्षेत्र में देश और प्रदेश की संस्कृति को समृद्ध साली बनाया जा सकेगा एवं पर्यटन स्थल और पर्यावरण का संरक्षण भी किया जा सकेगा।

अध्ययन क्षेत्र के पर्यटन स्थलों पर जो असुविधाएं पाई गई, उक्त (लगभग) सभी समस्याएं देश के अधिकांश (मध्यम) स्थलों पर भी देखी जा सकती है। उक्त समस्याओं का उचित समय पर उचित समाधान पर्यटन उद्योग के विकास के लिए अति आवश्यक है। देश में पर्यटकों को आकर्षित करने की तकनीक, समस्याओं का समाधान करने की तकनीक तो उपलब्ध है, परंतु इन तकनीकों का सही समय पर प्रयोग नहीं हो पाता है। आवश्यकता इस बात की है कि पर्यटन के क्षेत्र में पर्यटकों को आकर्षित करना तथा समस्याओं को दूर करने हेतु ठोस कदम (समय रहते) उठाए जाएं, ताकि पर्यटन के विकास के साथ–साथ जीवन एवं पर्यावरण के साथ न्याय संगत कार्य हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. **डॉ. एस. एल. वरे** – मध्य प्रदेश में पर्यटन, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
2. **डॉ. शिव अनुराग पटेरवा** – मध्य प्रदेश अतीत और आज, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
3. हिस्ट्री एंड डेवलपमेंट प्रकाशन – भाटिया ए क
4. भारत की जनगणना 2011
5. http-//www-tourism-gov-in
6. http-// shodhganga inflinet ac-in
7. http-//hi-m-Wikipedia-org/Wiki/
8. http-//Barwani-nic-in